मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्य → भारत में प्रायः सभी मुस्लिम शासकों की अपनी आकांक्षाएँ, परिस्थितियाँ तथा आवश्यकताएँ थी और इन्हीं के अनुरूप उनके शासन काल में उद्देश्य भी थे।

① इस्लाम-धर्म का प्रचार करना → मुस्लिम कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य इस्लाम-धर्म का प्रचार करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही प्रत्येक मकतब या मदरसे से मिली हुई एक मस्जिद अवश्य रहती थी। मकतब तथा मदरसों का बनवाना भी उतना ही पवित्र समझा जाता था जितना मस्जिदों का निर्माण करवाना। मकतबों में आरम्भ से ही कुरानों की शिक्षा दी जाती थी और इस प्रकार बालों को इस्लाम-धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराया जाता था।

② इस्लाम के बन्दों में ज्ञान का प्रसार करना → इस्लाम के बन्दों में ज्ञान का प्रकाश तथा प्रचार करना मुस्लिम कालीन शिक्षा का दूसरा बड़ा उद्देश्य था। हजरत मोहम्मद ने ज्ञान को अमृत तथा निजात (मुक्ति) को साधन बतलाया और इस प्रकार अपने धर्म के अनुयायियों को ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

③ चरित्र-निर्माण करना → मुस्लिम शिक्षा के तीसरे उद्देश्य में शिक्षा द्वारा व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर बहुत बल दिया गया। वे शिक्षा को व्यक्ति की नैतिक उन्नति का साधन मानते थे।

④ मुस्लिम संस्कृति का प्रचार करना → मुसलमान भारत में विदेशों से आये थे। अतः उनकी संस्कृति, भाषा, सामाजिक प्रथाएँ, आचार-व्यवहार आदि हिन्दुओं की संस्कृति से भिन्न थे। वे शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति का भारत के लोगों में प्रचार करना चाहते थे। जिससे अधिक से अधिक भारतीय इस्लाम से प्रभावित होकर इस्लाम को ग्रहण कर लें।

⑤ मुस्लिम शासन का विस्तार करना → मुस्लिम शासकों को हमेशा इस बात का भय रहता था कि कहीं इस देश की विशाल हिन्दू जनता उनके विरुद्ध विद्रोह न कर दे। इसके लिए वे भारत की हिन्दू जनता को अपने रंग में रंगकर अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाना चाहते थे।

Scanned with CamScanner

⑥ सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करना → मुस्लिम शिक्षा का एक उद्देश्य सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करना भी था। इस्लाम-धर्म पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता था। इसलिए वे जीवन में पारलौकिक की अपेक्षा इहलौकिक अथवा सांसारिक सुखों की प्राप्ति को अधिक महत्व देते थे। शिक्षा-संस्थाओं में विद्यार्थियों का जीवन-प्राचीन भारतीय विद्यार्थियों की भाँति कठोर न था। उनका जीवन सुखमय होने के साथ-2 विलासिता के रंग से रंगा हुआ था।

⑦ मुस्लिम श्रेष्ठता की स्थापना → मुस्लिम शिक्षा का सातवाँ उद्देश्य हिन्दुओं की सभ्यता, संस्कृति तथा आदर्शों से रंगकर भारत में मुस्लिम श्रेष्ठता की स्थापना करना था। मुसलमान शासक इस बात से पूर्णतया परिचित थे कि इस देश की विशाल हिन्दू जनता के दृष्टिकोण को दिशा के द्वारा परिवर्तित करके ही मुस्लिम सभ्यता तथा संस्कृति का उपासक बनाया जा सकता है और इस प्रकार उन्होंने मुस्लिम शासन का दृढ़ स्तम्भ बनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date: / /

मकतब और प्राथमिक शिक्षा (Maktab and Primary Education)

① **मकतब का अर्थ →**
प्राथमिक शिक्षा मकतबों में दी जाती थी। 'मकतब' शब्द अरबी भाषा के 'कुतुब' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है "उसने लिखा।" इस प्रकार 'मकतब' वह स्थान है- जहाँ लिखना सिखलाया जाता है। समस्त मुस्लिम बालकों में मकतबों से शिक्षा प्राप्त करने की आशा की जाती थी। जिससे की वे दैनिक धार्मिक कृत्यों में प्रयोग किये जाने वाले कुरान के विशिष्ट भागों से अवगत हो जाएँ।

② **प्रवेश →** इस शिक्षा में 'बिस्मिल्लाह' रस्म पूरी की जाती थी। यह रस्म जब बालक ५ वर्ष ५ माह ५ दिन होने पर होती थी। इस अवसर पर बालक को नये कपड़े पहनाये जाते थे और उसी से सम्बन्धी जमा होते थे। मौलवी साहब कुरान की आयतों को पढ़ते थे और बालक उसे दोहराते थे। यदि वह पूरा पाठ नहीं पढ़ पाता था तो उसका बिस्मिल्लाह रस्म कह देना ही पर्याप्त समझा जाता था।

③ **शिक्षण विधि →** मकतबों की शिक्षण - विधि मौखिक थी बालकों को 'कलमा' रटना पड़ता था और कुरान की आयतें कण्ठस्थ करनी पड़ती थी।

Scanned with CamScanner